

समाचार पत्र

भाकृअनुप-राष्ट्रीय पादप आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो
(भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद)
आईएसओ 9001-2008 प्रमाणित संस्थान



जनवरी-मार्च 2016

www.nbpgr.ernet.in

ISSN 0971-2232

अंक 32 सं. 1

तिमाही

विषय सूची

पीजीआर क्रियाकलाप	2
अन्वेषण तथा जननद्रव्य का संग्रहण	
जननद्रव्यों का विनिमय	
पादप संगरोध	
जननद्रव्य का संरक्षण	
जननद्रव्य का लक्षणवर्णन और मूल्यांकन	
जननद्रव्य पर फील्ड दिवसों का आयोजन	4
किसानों के लिए पादप आनुवंशिक संसाधन (पीजीआर)	5
प्रदर्शनियां / मेले	6
प्रशिक्षण / कार्यशालाएं	7
कार्मिक समाचार	7

डॉ. टी. महापात्र, सचिव, डेयर एवं महानिदेशक, भा.कृ.अनु.प. का आईसीएआर-एनबीपीजीआर का निरीक्षण

डॉ. त्रिलोचन महापात्र, सचिव, डेयर और महानिदेशक, आईसीएआर, ने 31 मार्च, 2016 को आईसीएआर-राष्ट्रीय पादप आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो का दौरा किया। इस अवसर पर डॉ. जे. एस. संधू, उपमहानिदेशक (फसल विज्ञान) और डॉ. जे. एस. चौहान, सहायक महानिदेशक (बीज) भी उनके साथ उपस्थित थे। उन्होंने आईसीएआर-एनबीपीजीआर के वैज्ञानिकों और कर्मचारियों को संबोधित किया। इस अवसर पर एनबीपीजीआर के निदेशक, डॉ. के. सी. बंसल ने सर्वप्रथम महानिदेशक महोदय और अन्य गणमान्य व्यक्तियों का स्वागत किया और संस्थान की गतिविधियों और उपलब्धियों पर एक संक्षिप्त प्रस्तुति दी। डॉ. टी. महापात्र ने उपस्थित सभी लोगों को पूर्ण निष्ठा, ईमानदारी और दृढ़ संकल्प के साथ काम करने के लिए एक प्रेरणादायक संदेश दिया। अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि एनबीपीजीआर, भा.कृ.अनु.प. के सर्वश्रेष्ठ संस्थानों में से एक है जिसे भावी पीढ़ी के लिए जर्मप्लाज्म के संरक्षण जैसे अधिदेश को पूरा करने के कार्य को सौंपा गया है। उन्होंने कहा कि उनके विचार से ब्यूरो को भू-संदर्भित और अंतराल-विश्लेषण के आधार पर अपनी अन्वेषण गतिविधियों को एक नया स्वरूप देने की जरूरत है ताकि गैर-अन्वेषित क्षेत्रों और गुण विशिष्ट जननद्रव्य की खोज की जा सके।

उन्होंने प्राथमिकता वाले क्रियाकलापों के रूप में जैव-रासायनिक विश्लेषण सहित गुण-विशिष्ट जर्मप्लाज्म की पहचान करने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने यह परामर्श भी दिया कि अवरोधित (इंटरसेप्ट) किए गए नए कीटों की पहचान एवं निदान, पांपुलेशन में कीट वेरिएंट की गतिशीलता की निगरानी और विदेशी कीटों के प्रबंधन हेतु पादप-संगरोध को एक नया आयाम दिया जाए। उन्होंने ब्यूरो के डीएनए फिंगरप्रिंटिंग सुविधा को मजबूत करने और विभिन्न किस्मों के डीएनए फिंगरप्रिंटिंग के लिए इसे एक राष्ट्रीय कानूनी प्राधिकरण के रूप में स्थापित किए जाने की आवश्यकता पर बल दिया। महानिदेशक महोदय ने इस संस्थान को ऊंचाइयों तक ले जाने में वर्तमान निदेशक सहित सभी पूर्व निदेशकों और ब्यूरो के कर्मचारियों की सराहना की। उन्होंने उपस्थित लोगों का स्वागत किया और राष्ट्र निर्माण की दिशा में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा किए जा रहे प्रयासों में उनके समर्थन और सहयोग की मांग की।

डॉ. महापात्र ने इस अवसर पर, 'जलवायु परिवर्तन हेतु अनुकूलन क्षमता को बढ़ाने के लिए वाह्य स्थाने संग्रह और जलवायु एनालॉग्स' पर एक प्रकाशन का भी विमोचन किया, जो कि एनबीपीजीआर द्वारा वर्ष 2011-2015 के दौरान क्रियान्वित सीसीएएफएस वित्त पोषित परियोजना का परिणाम था। डॉ. महापात्र ने 26 मार्च, 2016 को आईसीएआर-एनबीपीजीआर के क्षेत्रीय केन्द्र, हैदराबाद का भी दौरा किया तथा वर्तमान निदेशक के नेतृत्व में वहां किए जा रहे शोध कार्यों की सराहना की।



डॉ. त्रिलोचन महापात्र, एनबीपीजीआर के क्षेत्रीय केन्द्र, हैदराबाद के स्टॉफ कर्मियों से विमर्श करते हुए (बाएं) तथा आईसीएआर-एनबीपीजीआर, नई दिल्ली में एक प्रकाशन का विमोचन करते हुए (दाएं)

पीजीआर क्रियाकलाप

अन्वेषण तथा जननद्रव्य का संग्रहण

आईसीएआर- एनबीपीजीआर, बेस केंद्र, कटक

इस दौरान तीन अन्वेषण संचालित किए गए और *कुकुमिस*, *अबेलमॉस्कस*, लवण सहिष्णु चावल, अलसी और कुसुम जननद्रव्यों को शामिल करते हुए कुल 148 पादप प्राप्तियों का संग्रह किया गया। एकत्र किए गए उल्लेखनीय जननद्रव्यों में हैं: लवण सहिष्णु चावल जैसे रहसपंजर (डीपी/बीसीएम-2296), नोना बोरका (डीपी/बीसीएम- 2303), लूनाबखडा (डीपी/बीसीएम-2310), लूना पटेनी (डीपी/बीसीएम-2314), शालुकी (डीपी/बीसीएम-2288 तथा 2294); *कुकुमिस* के जंगली सहोदर जैसे अधिकतम फल आकार 12.8 X 8.1 सेंमी सहित *सी. सैटाइवस* की किस्म *हार्डविककी* (आरसीएम/एलकेबी/57); दुर्लभ और लंबे कैप्सूल (>7.0 सेंमी) सहित *अबेलमॉस्कस एंगुलोसस* किस्म *परप्थूरियस* (आरसीएम/एलकेबी/22)।



कोरापुट, ओडिशा से संग्रहित की गई *कुकुमिस सैटाइवस* किस्म *हार्डविककी* का फल आकार (13 सेंमी)

कुकुमिस तथा *अबेलमॉस्कस*

कुकुमिस तथा *अबेलमॉस्कस* पर पहला अन्वेषण कार्यक्रम 8 से 18 दिसम्बर, 2015 के दौरान आईसीएआर-केंद्रीय बागवानी प्रायोगिक केंद्र (आईआईएचआर) के भुवनेश्वर केंद्र के साथ मिलकर ओडिशा के गजापति, रायगढ़ और कोरापुट को सम्मिलित करते हुए पूर्वी घाट क्षेत्र में संचालित किया गया। इस अन्वेषण कार्यक्रम के तहत *कुकुमिस सैटाइवस* किस्म *हार्डविककी* (34), *सी. मेलो* किस्म *एग्रेस्टिस* (15), *सी. केलोसस* (4), *अबेलमॉस्कस एंगुलोसस* किस्म *परप्थूरियस* (3), *ए. मेनिहॉट* उपप्रजाति *टेट्राफिलिस* (4), *ए. फिकलनियस* (5), *हिबिस्कस सबडरिफिका* (7), *एच. एकुलियेटस* (1), *निकॉड्रिया फाइसेलोडस* (1), *सोलेनम सिस्मिब्रिफोलियम* (1) तथा *मोमोर्डिका चरंटिया* किस्म *मुरिकाटा* (1) को एकत्रित किया गया।

खेती वाले लवण सहिष्णु चावल और जंगली *सोलेनम* प्रजाति

आईसीएआर-राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान, कटक के सहयोग से दिसंबर 18-24, 2015 के दौरान दूसरा अन्वेषण मिशन, चावल जननद्रव्य के संग्रह हेतु ओडिशा के तटीय लवणीय क्षेत्रों (बालासोर, भद्रक, केंद्रपाड़ा जिले) तथा पश्चिम बंगाल के पूर्वी मेदिनापुर जिले में किया गया था। खेती योग्य लवण सहिष्णु चावल के (37) और जंगली

सोलेनम प्रजातियों (02) सहित कुल 39 पादप प्राप्तियों को एकत्रित किया गया।

अलसी और कुसुम

आईसीएआर-भारतीय तिलहन अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद और एआईसीआरपी-अलसी, कानपुर के सहयोग से ओडिशा के कालाहांडी और बोलांगीर जिलों में फरवरी 18-24, 2016 के दौरान तीसरा अन्वेषण अभियान, शुरू किया गया था। इस अन्वेषण अभियान में पौधे की ऊंचाई, शाखाओं की प्रवृत्ति, पत्तियों की संरचना और फूलों के रंगों में व्यापक परिवर्तनशीलता सहित *लिनम यूसिटेसुमम* (16), *कार्थेमस टिक्टोरियस* (13), *एबेलमॉस्कस फाकलनियस* (3) तथा *हिबिस्कस केन्नाबिनस* (1) को इस अभियान में एकत्रित किया गया।

आईसीएआर-एनबीपीजीआर, क्षेत्रीय केंद्र, हैदराबाद

विभिन्न फसलों पर तीन अन्वेषण अभियान चलाए गए जिनका विवरण नीचे दिया गया है :

अरहर की जंगली प्रजातियां

इस अन्वेषण को आंध्र प्रदेश के कुरनूल और वाईएसआर कडप्पा जिलों के कुछ हिस्सों में संचालित किया गया था। इसमें *कैजेनस स्काराबेओइडिस*, *कैजेरस स्पी.*, *राइनकोजिया स्पी.*, *टेरानस लेविगेलिस* तथा *विलटोरिया टर्नेटिया* के कुल 25 पादप प्राप्तियों को एकत्रित किया गया।



कुरनूल (एपी) के पन्थम गांव से संग्रहित *कैजेनस स्कारेबिओडिस*

जूट की जंगली प्रजातियां (*कॉरकोरस* स्पी.)

काइजेफ के सहयोग से इस अन्वेषण अभियान को आंध्र प्रदेश के दक्षिण तटीय और रायलसीमा क्षेत्रों के कुछ हिस्सों में चलाया गया। इसमें जेनेरा *कॉरकोरस*, *कोटालेरिया* तथा *हिबिस्कस* की 12 प्रजातियों के जननद्रव्यों को एकत्रित किया गया जिसमें *कॉरकस एस्टुएंस* (1), *सी. कैप्सुलेरिस* (1), *सी. फेसिकुलेरिस* (16), *सी. ओलिटोरियस* (19), *सी. ट्राइडेंस* (22), *सी. ट्राइलोकुलेरिस* (28), *सी. अर्टिसिफोलियस* (8), *कोटालेरिया स्पी.* (2) तथा *हिबिस्कस ओवेलिफोलियस* (1) सम्मिलित हैं।

विग्ना और *मेक्रोटायलोमा* की जंगली प्रजातियां

इस अन्वेषण को एमयूएलएलएआरपी (मुलार्पी), कानपुर के सहयोग से आंध्र प्रदेश के पूर्वी व पश्चिमी गोदावरी जिले के कुछ भागों

और कृष्णा जिलों में चलाया गया। *विग्ना एकोनिटीफोलिया*, *वी. रेडियाटा*, *वी. ट्रिलोबाटा*, *वी. सुब्लोबाटा*, *मेकोटाइलोमा यूनिफ्लोरम* तथा *एम. सिलिएटम* के जंगली सहोदरों और ज्ञात वंशकर्मों का संग्रह किया गया। लक्षित प्रजातियों जैसे *विग्ना अनग्विकुलाटा* (19), *वी. रेडियाटा* (8), *वी. मुगो* (11), *वी. ट्रिलोबाटा* (4), *विग्ना स्पी.* (7) तथा *मेकोटाइलोमा यूनिफ्लोरम* (5) सहित कुल 54 प्रविष्टियों का संग्रह किया गया।

इसके अलावा जंगली अरहर के *केजानस स्केराविओडिस* (13) तथा *सी. एल्बिकन्स* (1) का भी संग्रह किया गया। इसके अलावा, जंगली अरहर की 14 प्रविष्टियों को भी एकत्रित किया गया जिसमें *केजेनस स्केरेबीओडिस* (13) तथा *सी. एल्बिकन्स* (1) सम्मिलित हैं।

जननद्रव्यों का विनिमय

आयात

विभिन्न फसलों के 1,299 एक्सेसनों को 14 देशों से समावेशन किया गया। इनमें से कुछ संभावनायुक्त प्रविष्टियों में शामिल हैं :

टमाटर (ईसी 879895–905) संयुक्त राज्य अमेरिका : रोग प्रतिरोधी लक्षणों वाली जंगली प्रजाति (*सोलेनम नियोरिवकी*, *एस. चेनेल्यूस्की*, *एस. कॉर्नेलियोमुलेरी*, *एस. गेलापेजेंस*, *एस. आर्कनम*, *एस. वीजमेनिए*, *एस. हुएलेसेंस*, *एस. पिग्मिनेलिफोलियम*)

यूकेलिप्टस (ईसी 881243–50) इजराइल : अधिक लकड़ी-उपज और पराग उत्पादन सहित संभावनायुक्त विदेशी प्रजातियाँ (*यूकेलिप्टस केलिकोगोना*, *ई. ऑक्सीडेंटैलिस*, *ई. बुडवार्डे*, *ई. टॉरक्वाटा*, *ई. ल्यूकॉक्सीलॉन*, *ई. एल्बोपरप्यूरिया*, *ई. ल्यूकोक्सिलॉन* उप प्रजाति *मेगालोकार्पा*)

ब्लैक लोकस्ट (रोबिनिया स्पूडोअकेशिया) (ईसी 871838) हंगरी : प्रारंभिक वर्षों में अत्यधिक वृद्धि, न्यूनतम 100 प्रतिशत अधिक मात्रात्मक उत्पादन, तने का सीधा आकार तथा उच्च गुणवत्ता वाली लकड़ी की प्राप्ति

अंगूर (ईसी 873363–75) संयुक्त राज्य अमेरिका : अत्यधिक उपज संभावनाओं वाली संकर किस्म, नीले, बीजरहित, बड़े गुच्छे, अंडाकार तथा शीत के प्रति कठोर लक्षण वाली किस्म

निर्यात

सहयोगात्मक अनुसंधान परियोजनाओं के तहत विएन्ना को किन्नो संतरे के पांच नमूने, यूके को गेहूँ के 32 नमूने तथा स्विटजरलैंड को कसावा के चार नमूनों का निर्यात किया गया।

राष्ट्रीय आपूर्ति

आईसीएआर-एनबीपीजीआर, नई दिल्ली ने एमटीए के अंतर्गत आईसीएआर संस्थानों/राज्य कृषि विश्वविद्यालयों/अन्य विश्वविद्यालयों/अनुसंधान प्रयोक्ताओं को विभिन्न फसलों के 408 नमूनों की आपूर्ति की गई।

आईसीएआर-एनबीपीजीआर, के बेस केंद्र, कटक द्वारा आईसीएआर-एनआरआरआई, कटक को लक्षण वर्णन तथा अन्य अनुसंधान उद्देश्यों के लिए उगाई जाने वाली चावल जननद्रव्य की 37 पादप प्राप्तियों की आपूर्ति की गई।

आईसीएआर-एनबीपीजीआर के क्षेत्रीय केंद्र, हैदराबाद ने टीएनएयू (34) तथा वाई.एस.आर. बागवानी विश्वविद्यालय (52) सहित कुल 86 मिर्च जननद्रव्य के नमूनों की आपूर्ति की। जूट की जंगली प्रजातियों के कुल 124 एक्सेसनों के वाउचर नमूनों को जो कि जेनेरा *कॉरकोरस*, *कोटेलेरिया* तथा *हिबिरकस* प्रजातियों से संबंधित थे इनमें –*कॉरकोरस*

एस्ट्रुएस (15), *सी. केप्सुलेरिस* (1), *सी. फेसिकुलेरिस* (16), *सी. ओलिटोरियस* (19), *सी. ट्राइडेंस* (22), *सी. ट्राइलोकुलेरिस* (28), *सी. अर्टिसिफोलियस* (8), *कोटेलेरिया स्पी.* (2), *हिबिसकस ओवेलिफोलियस* (1) तथा *एंडेमिक लैंडरेस* विविधता वाली केनाफ (3) तथा रोजेले (9) की काइजेफ को आपूर्ति की गई।

पादप संगरोध

आईसीएआर-एनबीपीजीआर, नई दिल्ली में पारजीनी नमूनों को सम्मिलित करते हुए आयातित जननद्रव्यों के 1,330 नमूनों का संगरोध के लिए प्रसंस्करण किया गया। विभिन्न प्रकार के कीटों से ग्रसित कुल 144 नमूनों को पाया गया तथा उपयुक्त उपचारों द्वारा इनकी अभिरक्षा की गई। धान के कुल 09 नमूनों को रोगनिरोधी एवडब्ल्यूटी के विषयाधीन रखा गया जबकि मिर्च और टमाटर के 30 नमूनों का 10 प्रतिशत ट्राई-सोडियम ऑर्थोफॉस्फेट से उपचार किया गया। विभिन्न फसलों के 11,349 नमूनों पर प्रेक्षण लेने हेतु मांगकर्ताओं के स्थानों पर प्रविष्टि पश्चात 07 संगरोध जांच (पीईक्यूआई) की गई। निर्यात संगरोध उद्देश्यों के लिए 100 नमूनों का प्रसंस्करण किया गया। राष्ट्रीय जीन बैंक में कीट मुक्त संरक्षण के उद्देश्य से रखे गए विभिन्न फसल-जननद्रव्यों के 6,027 नमूनों को बीज स्वास्थ्य जांच हेतु प्रसंस्कृत किया गया। 1,664 नमूनों को एक्स-रे रेडियोग्राफी की गई। 419 संकमित/ग्रसित नमूनों में से 351 की मानक विधियों से अभिरक्षा की गई जबकि 68 को निरस्त किया गया।

आईसीएआर-एनबीपीजीआर के क्षेत्रीय केंद्र, हैदराबाद में आयात जननद्रव्य के (2,971) तथा निर्यात जननद्रव्यों (5,394) के कुल मिलाकर 8,365 नमूनों का प्रसंस्करण किया गया। आयात किए गए जननद्रव्यों में चावल, गेहूँ, मक्का, बाजरा, टमाटर, चना, कपास, मिर्च, तरबूज तथा यूकेलिप्टस प्रजाति शामिल थीं को विभिन्न देशों से प्राप्त किया गया था। अनिवार्य उपचार के पश्चात आयातित जननद्रव्यों के कुल 1,442 नमूनों को इनके ग्राहकों को जारी किया गया। इकिसेट द्वारा विभिन्न देशों को निर्यात के उद्देश्य से ज्वार (2), बाजरा (3), चना (17), अरहर (18) सहित कुल 40 नमूनों को रोगात्मक कारणों से रोक लिया गया। 16 संस्थानों को संगरोध क्लियरेंस सेवा प्रदान की गई। कुल 609 प्रविष्टियों को कवकों (562), जीवाणुओं (03) तथा कीटों (44) से ग्रसित पाया गया जिन्हें उपयुक्त उपचारों द्वारा बचाया गया।

जननद्रव्य लक्षणवर्णन और मूल्यांकन

आईसीएआर-एनबीपीजीआर, नई दिल्ली में रबी 2015–16 के दौरान विभिन्न विशेषताओं के लिए गेहूँ (4,447), जौ (257), ब्रेसिका (2,382), अलसी (250), मसूर (1,171), चना (726), टमाटर (750) तथा अन्य संभावनायुक्त फसलों (191) सहित कुल मिलाकर 8,968 प्रविष्टियों का लक्षणवर्णन और मूल्यांकन किया गया। कई विशिष्ट गुणों वाली प्रविष्टियों की पहचान की गई : गेहूँ की अगेती किस्मों में आईसी534898, आईसी 535206; लंबे स्पाइक वाली प्रविष्टियों में आईसी536081, आईसी



जल्दी पकने वाला गेहूँ (आईसी335778)

335711; नोमयुक्त गेहूँ की आईसी265318, आईसी252653 जबकि कम पादप ऊंचाई वाली प्रविष्टियों में आईसी570302, आईसी766141; सरसों की अगेती प्रविष्टियों में आईसी296749, ईसी766051; मुख्य प्ररोह पर सिलिका की उच्च संख्या के लिए प्रविष्टि ईसी247855, ईसी347857 तथा सरसों में उच्च बीजों की संख्या के लिए आईसी122237, आईसी122240 को उल्लेखनीय पाया गया।

आईसीएआर-एनबीपीजीआर के क्षेत्रीय केंद्र, हैदराबाद में रबी 2015-16 के दौरान ज्वार (150), राइसबीन (35) तथा टमाटर (90) प्रविष्टियों को चैक किस्मों के साथ उगाया गया।

आईसीएआर-एनबीपीजीआर के बेस केंद्र, कटक में कुल मिलाकर 121 प्रविष्टियों का लक्षणवर्णन एवं बहुगुणन किया गया जिसमें मूंग (67) तथा उड़द (54) को उगाया गया। मुकुना प्रुरिएंस (20) तथा हिबिस्कस सबदरिफफा (11) का विभिन्न मात्रात्मक तथा गुणात्मक विशेषताओं का चरित्रचित्रण किया गया। ओसिमम केनम (9), ओ. बेसिलिकम (9), ओ.

किलिमैंडसचोरिकम (2), ओ. सिट्रियोडोरम (4) में औषधीय उपज तथा सुगंधित तैल/पौध का आकलन किया गया।

आईसीएआर-एनबीपीजीआर के क्षेत्रीय केंद्र, त्रिशुर में लिटिल मिलेट (पेनिकम सुमात्रेंस) का सात गुणात्मक तथा 19 मात्रात्मक लक्षणों के लिए लक्षणवर्णन किया गया। तमिलनाडु के पूर्वी घाट से एकत्रित की गई प्रविष्टियों में काफी विभिन्नता देखी गई। एके-26, एके-78 तथा आईसी 613521 को 23.0 ग्राम/पौध से अधिक अच्छे दानों की उपज वाला पाया गया।

आईसीएआर-एनबीपीजीआर के क्षेत्रीय केंद्र, शिमला में विभिन्न फसलों के कुल मिलाकर 1874 प्रविष्टियों का लक्षणवर्णन एवं मूल्यांकन किया गया जिसमें चौलाई (502), कुलथी (263), चैनोपॉड (71), किडनी बीन (669), एडजुकी बीन (67), राइसबीन (110), लोबिया (112) तथा मिलेट (80) की प्रविष्टियां शामिल हैं। एनबीपीजीआर के मानक निर्धारकों के अनुसार अखरोट की 42 प्रविष्टियों का लक्षणवर्णन भी किया गया।



तमिलनाडु के पूर्वी घाट से आदिवासी इलाकों से एकत्रित फॉक्स टेल मिलेट में विभिन्नता

जीनोमिक संसाधन तथा जैवसूचना

व्यापक आर्थिक महत्व के एक औषधीय पौधे टिनोस्पोरा कॉर्डिफोरिया का सार्थक दोहन के लिए एक स्ट्रेप्टाविडिन-बॉयोटिन आधारित सर्वोद्विगत एप्रोच के उपयोग द्वारा टी. कॉर्डिफोलिया के जीनोमिक डीएनए से सृजित चार माइक्रोसैटेलाइट प्रचुर लाइब्रेरी [(CT)₁₄, (AC)₁₀, (GT)₁₂, तथा (AAC)₈ से नूतन-जीनोमिक मार्कर्स को विकसित किया गया। इस अध्ययन से प्राप्त 90 एसएसआर अनुक्रमों को एनसीबीआई (केटी 384079 से केटी 384168) में प्रस्तुत किया गया। इसके अतिरिक्त, इन मार्कर्स को टिनोस्पोरा रम्फी तथा टी. साइनेंसिस में 83.3 प्रतिशत तथा 85.7 प्रतिशत अंतरण दक्षता के साथ सफलतापूर्वक स्थानान्तरित किया गया

जननद्रव्य पर फील्ड दिवसों का आयोजन

फसल सुधार कार्यक्रम में जननद्रव्यों का उपयोग सुनिश्चित करने के लिए, (सीआरपी-एबी) के तहत संबंधित राहयोगियों ज्वार तथा कुसुम पर सीआरपी-एबी के साथ मिलकर फील्ड दिवसों का आयोजन किया गया। ज्वार की फसल पर फील्ड दिवस का आयोजन आईसीएआर-भारतीय मिलेट अनुसंधान संस्थान और सोलापुर स्थित इसके क्षेत्रीय स्टेशन द्वारा कमशः 7 जनवरी तथा 28 जनवरी 2016 को किया गया। कुल मिलाकर 5,000 प्रविष्टियों (2,500 हैदराबाद में और 2,500 सोलापुर में) को उगाया गया।



आईसीएआर-आईआईएमआर, हैदराबाद में ज्वार खेत दिवस पर सहभागी

कुसुम की फसल के लिए फील्ड दिवस का आयोजन 12 फरवरी, 2016 को आईसीएआर-भारतीय तिलहन अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद के साथ मिलकर किया गया। इसके तहत कुल मिलाकर 1,400 प्रविष्टियों को उगाया गया।



आईआईओआर, हैदराबाद में कुसुम पर फील्ड दिवस में सहभागी

सूरजमुखी की फसल पर फील्ड दिवस का आयोजन आईसीएआर-भारतीय तिलहन अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद के सहयोग से 29

जनवरी, 2016 को किया गया। यूएसडीए, यूएसए से प्राप्त लगभग 269 प्रविष्टियों को बहुलीकरण और लक्षणवर्णन के लिए आईआईओआर में उगाया गया। आईसीआरआईएसएटी (इक्वीसेट) के फार्म में बहुलीकरण और लक्षणवर्णन के लिए 925 प्रविष्टियों को उगाया गया।

आईसीएआर-एनबीपीजीआर, नई दिल्ली में जननद्रव्यों पर प्रथम फील्ड दिवस तिलहनों और संभावित फसलों पर और दूसरा फील्ड दिवस गेहूँ और जौ की फसल पर क्रमशः 04 मार्च, 2016 और 28 मार्च,



आईसीएआर-एनबीपीजीआर, नई दिल्ली में गेहूँ और जौ पर आयोजित खेत दिवस में सहभागी

2016, को आयोजित किया गया। 25 आईसीएआर संस्थानों और राज्य कृषि विश्वविद्यालयों से करीब 110 वैज्ञानिकों ने इन फील्ड दिवसों में भाग लिया और अपनी अनुरोधन जरूरतों के आधार पर जननद्रव्यों का चयन किया। फील्ड दिवस के दौरान सामूहिक चर्चा और प्रतिक्रिया सत्रों का भी आयोजन किया गया।

आईसीएआर-एनबीपीजीआर, के क्षेत्रीय केंद्र, त्रिचूर द्वारा कदन्न अनाजों को लोकप्रिय बनाने के लिए 12 जनवरी, 2016 को इन अनाजों (स्मॉल मिलेट) पर एक फील्ड दिवस आयोजित किया गया। केरल, तमिलनाडु और कर्नाटक से वैज्ञानिकों और छात्रों को शामिल करते हुए कुल 51 प्रतिभागियों ने इस कार्यक्रम में सहभागिता की। इस

फील्ड दिवस में लिटिल मिलेट, कंगनी, प्रोसो मिलेट तथा रागी की 76 प्रविष्टियों को उगाया गया था।



एनबीपीजीआर के क्षेत्रीय केंद्र, त्रिचूर में स्मॉल मिलेट्स पर फील्ड दिवस में सहभागी

शोधकर्ताओं और प्रजनकों के लाभार्थ 6 फरवरी, 2016 को पत्तेदार चौलाई पर एक फील्ड दिवस का आयोजन किया गया। आईआईएचआर, केएयू और टीएनएयू से वैज्ञानिकों और छात्रों सहित पंद्रह प्रतिभागियों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया। उन्हें पत्तेदार चौलाई की प्रजातियों की 220 प्रविष्टियों से अवगत कराया गया।



एनबीपीजीआर के क्षेत्रीय केंद्र त्रिचूर में पत्तीदार चौलाई पर फील्ड दिवस

किसानों के लिए पादप आनुवंशिक संसाधन (पीजीआर)

जनजातीय उप-योजना के तहत पीजीआर जागरूकता कार्यक्रम

आईसीएआर-एनबीपीजीआर के क्षेत्रीय केंद्र, शिलांग द्वारा आईसीएआर आरसी एनईएच, उमियम के सहयोग से टीएसपी 'आईसीएआर- एनबीपीजीआर किसानों के साथ' कार्यक्रम के अंतर्गत 22 मार्च, 2016 को रिमट गांव में एक जैव-विविधता मेला व पादप आनुवंशिक संसाधन जागरूकता कैम्प लगाया गया। इस कैम्प में रिमट, थिनरॉयट, डींगलिंग, माउमुथोह, रसोंग, रंगफ्लैंग तथा लाइतक्सेह समेत सात गांवों से कुल 152 किसानों से सहभागिता की। आलू, मिर्च, पत्ता गोभी, फूल गोभी, पपीता और फ्रेंच बीन्स के बीज तथा कृषि औजार टूल किट, बांस की टोकरी, सहित एक किसान किट प्रत्येक किसान को दिया गया। पांच गांवों के किसानों को समुदाय बीज बैंक के लिए लकड़ी के बक्सों भी दिए गए। किसानों के साथ परस्पर चर्चा को भी कार्यक्रम का हिस्सा बनाया गया।



जागरूकता कार्यक्रम में सहभागीगण

एनबीपीजीआर के क्षेत्रीय केंद्र, हैदराबाद द्वारा एक एनजीओ, आशा के साथ मिलकर 17 मार्च, 2016 को पूर्वी गोदावरी जिले के रमन्नापालेम,



चिंतुरु में आयोजित पीजीआर जागरूकता कार्यक्रम तथा जैव विविधता प्रदर्शनी में सहभागी

चिंतुरु में एक मूलभूत पादप आनुवंशिक संसाधन जागरूकता कार्यक्रम सह जैवविविधता प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य विभिन्न फसलों की स्थानीय किस्मों/पारंपरिक किस्मों की खेती का महत्व और उन्हें संरक्षित करना, पारंपरिक ज्ञान का प्रलेखीकरण तथा किसानों के अधिकारों के बारे में उनमें जागरूकता का सृजन करना था। इस कृषि-जैवविविधता प्रदर्शनी में लगभग 200 प्रतिभागियों ने सहभागिता की तथा किसानों के साथ परस्पर विचार विमर्श किया।

त्रिपुर जिले के पीयि डब्ल्यूएलएस क्षेत्र में मनियंकिनर ग्राम के मलायरायन आदिवासी पुरवा में 27 दिसम्बर, 2015 को 'जय किसान जय विज्ञान' सप्ताह मनाया गया। आईसीएआर-एनबीपीजीआर के क्षेत्रीय केंद्र, त्रिपुर द्वारा एक वैज्ञानिक-किसान पारस्परिक विचारविमर्श बैठक भी आयोजित की गई। लोगों की पोषणिक सुरक्षा को सुनिश्चित करने के लिए सब्जी के बीजों का वितरण इस कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण था।



पीचि-वझानी डब्ल्यूएलएस, त्रिपुर में एक आदिवासी गांव में 'जय किसान जय विज्ञान' सप्ताह समारोह में स्थानीय सहभागी

प्रदर्शनियां / मेले

आईसीएआर-एनबीपीजीआर ने आईसीएआर/डीएसी एंड एफडब्ल्यू द्वारा आयोजित दो प्रदर्शनियों में भाग लिया। 'अंतर्राष्ट्रीय दलहन वर्ष' की शुरुवात पर 14 फरवरी, 2016 को भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान, कानपुर में आयोजित कृषि प्रदर्शनी, में संस्थान ने कृषक समुदाय के लाभार्थी दलहनी फसलों के लिए विकसित की गई अपनी प्रौद्योगिकियों, सेवाओं और उपलब्धियों का प्रदर्शन किया। इस प्रदर्शनी का उद्घाटन माननीय केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री राधा मोहन सिंह जी के करकमलों से सम्पन्न हुआ।

कृषि, सहकारिता एवं किसान कल्याण विभाग, भारत सरकार ने भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के सहयोग से 19 से 21

मार्च, 2016 के दौरान पूसा नई दिल्ली में कृषि उन्नति मेला का आयोजन किया जिसमें एनबीपीजीआर ने सहभागिता की। भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र दामोदरदास मोदी जी ने 19 मार्च को इस मेले का उद्घाटन किया। इस मेले में एनबीपीजीआर ने अपने स्टॉल पर बीज जीनबैंक, कायोबैंक तथा इन विट्रो बैंक के 3-D मॉडलों, विशेषकर प्रौद्योगिकियों से संबंधित पोस्टर प्रदर्शनों, सेवाओं और संगठन की उपलब्धियों को प्रदर्शित किया तथा सजीव वस्तुओं में जननद्रव्य की विविधता को प्रजनकों, वैज्ञानिकों तथा किसानों के लिए प्रदर्शित किया गया। इस अवसर पर इस्सापुर के दस किसानों को सम्मानित किया गया।



'कृषि उन्नति मेला' में डॉ. जे. एस. चौहान, सहायक महानिदेशक (बीज) द्वारा आईसीएआर-एनबीपीजीआर स्टॉल का निरीक्षण



आईसीएआर-आईआईपीआर, कानपुर में एनबीपीजीआर के स्टॉल का निरीक्षण करते किसान

प्रशिक्षण / कार्यशालाएं

आईसीएआर-राष्ट्रीय पादप आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो के क्षेत्रीय केंद्र, त्रिचुर ने महिला सशक्तिकरण प्रोग्राम, केएससीएसटीई, केरला के वित्तीय सहयोग से कन्नूर जिले में पय्यानूर के निकट कोथाईमुक्कू में 23 जनवरी, 2016 को महिला कृषकों के लिए कडुवापन मुक्त करेला सब्जियों की खेती पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया।



प्रशिक्षण कार्यक्रम में सहभागी

आईसीएआर-एनबीपीजीआर, नई दिल्ली में 20 से 22 जनवरी, 2016 के दौरान जैवसुरक्षा फेज II पर यूएनईपी-जीईएफ क्षमता-निर्माण

परियोजना के तहत 'एलएमओ के सीमापार मूवमेंट हेतु प्रवर्तन एजेंसी (पादप संगरोध कामिकों) की क्षमता को सुदृढ़ करना' विषय पर एक प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया। आईसीएआर-



आईसीएआर-एनबीपीजीआर में सम्पन्न आईपीएस कार्यशाला में सहभागीगण

एनबीपीजीआर तथा पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा इसे संयुक्त रूप से आयोजित किया गया।

कार्मिक समाचार

विदेशों में प्रतिनियुक्ति

डॉ. अमित कुमार सिंह, वैज्ञानिक, जीनोमिक संसाधन प्रभाग ने ऑस्ट्रेलिया सरकार द्वारा प्रायोजित एडेवर अनुसंधान फेलोशिप-2015 के अंतर्गत विक्सलैंड विश्वविद्यालय, ब्रिसबन में एडवांस जीनोमिक्स के क्षेत्र में अपने तीन माह की पोस्ट डॉक्टोरल प्रशिक्षण को सफलतापूर्वक पूरा किया।

सेवा निवृत्ति

श्री के.डी. जोशी, टी-6 31.01.2016 को सेवा निवृत्त हुए
श्री राम रतन आर्या, टी-5 को आईसीएआर-एनबीपीजीआर के क्षेत्रीय केंद्र, भवानी से 31.01.2016 को सेवा निवृत्त हुए
श्री रोहताश, एसएसएस 31.01.2016 को सेवा निवृत्त हुए
श्री सोहन सिंह, एसएसएस, आईसीएआर-एनबीपीजीआर के क्षेत्रीय केंद्र, जोधपुर से 31.03.2016 को सेवा निवृत्त हुए

स्थानांतरण

श्री संजीव सिंह, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी का आईसीएआर-एनबीपीजीआर के क्षेत्रीय केंद्र शिलांग से आईसीएआर-एनबीपीजीआर, नई दिल्ली को स्थानान्तरण किया गया।

नियुक्तियां

डॉ. एस. के. कौशिक, प्रधान वैज्ञानिक, जीईडी ने 12.01.2016 को कार्यभार ग्रहण किया।

प्रोन्नति

निम्नलिखित वैज्ञानिकों का अगले उच्च ग्रेड में प्रमोशन किया गया।
डॉ. (श्रीमती) ज्योति कुमारी, डॉ. (श्रीमती) मंजूषा वर्मा, डॉ. संदीप कुमार, डॉ. डी.पी. सेमवाल, डॉ. (श्रीमती) रश्मि यादव, डॉ. जमीन अख्तर, डॉ. अरविंदरम कन्दन, डॉ. सोमनाथ राय, शिलांग को अगले उच्चतर ग्रेड में प्रमोशन दिया गया।

श्री राम कुमार शर्मा, जीईडी, को वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी (टी-6) के पद पर 01.01.2016 को प्रोन्नत किया गया।

श्री अशोक कुमार गुप्ता, क्षेत्रीय केंद्र, रांची को 01.01.2015 से वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी के पद पर प्रोन्नत किया गया।

श्री संजीव कुमार सिंह, डीजीआर, को 11.12.2012 को वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी (टी-6) के पद पर प्रोन्नत किया गया।

श्रीमती रीता गुप्ता, अन्वेषण प्रभाग को 15.05.2013 से वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी (टी-6) के पद पर प्रोन्नत किया गया।

श्री राम चंद्र, क्षेत्रीय केंद्र, शिमला को 10.02.2014 से वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी (टी-3) के पद पर प्रोन्नत किया गया।

श्री धरम पाल सिंह मीणा, टीसीसी यूनिट को 01.01.2015 से वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी (टी-6) के पद पर प्रोन्नत किया गया।

श्री एस.एस. भोज, जीईडी, को 01.04.2013 से वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी (टी-5) के पद पर प्रोन्नत किया गया।

श्री एस. एन. सरमाह, क्षेत्रीय केंद्र, उमियम को 01.01.2013 से वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी (टी-4) के पद पर प्रोन्नत किया गया।

श्री डी.के. पोखरियाल, डीजीआर को 05.02.2014 को तकनीकी सहायक (टी-3) के पद पर प्रोन्नत किया गया।

श्री रोहताश कुमार, डीजीआर, को 10.02.2014 को तकनीकी सहायक (टी-3) के पद पर प्रोन्नत किया गया।

श्री नरेश कुमार, पीक्यूडी, को 24.07.2014 को तकनीकी सहायक (टी-3) के पद पर प्रोन्नत किया गया।

श्री सुनील कुमार, पीक्यूडी को 17.02.2014 को वरिष्ठ तकनीकी सहायक (टी-4) के पद पर प्रोन्नत किया गया।

श्री अरुन कुमार, निदेशक प्रकोष्ठ को 01.07.2013 से तकनीकी अधिकारी (टी-5) के पद पर प्रोन्नत किया गया।

श्रीमती निर्मला डबराल, जीसीडी को 19.07.2015 से तकनीकी अधिकारी (टी-5) के पद पर प्रोन्नत किया गया।

श्री देव कुमार को 12.01.2016 को यूडीसी के पद पर प्रोन्नत किया गया।

पुरस्कार और मान्यताएं

डॉ. एस. सी. दुबे को फरवरी 26-27, 2016 को आयोजित छठे अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के दौरान पादप रोगविज्ञान में उल्लेखनीय योगदान के लिए भारतीय फाइटोपैथोलॉजिकल सोसायटी के जे. एफ. डस्ट्योर स्मारक व्याख्यान पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

डॉ. कविता गुप्ता को एस वी कृषि महाविद्यालय, तिरुपति (आंध्र प्रदेश) में 4-5 फरवरी, 2016 को सम्पन्न 'पादप स्वास्थ्य प्रबंधन में राष्ट्रीय प्राथमिकताओं पर सम्मेलन' के दौरान पौध-संरक्षण और जैव-सुरक्षा में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रतिष्ठित आरडीवीजे



प्रसाद राव मेमोरियल पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

डॉ. ए. कंदन, जे. अख्तर, बी. सिंह, यू. देव, आर. गोले, डी. चंद, ए. रॉय, एस. राजकुमार और पी. सी. अग्रवाल को प्लांट प्रोटेक्शन एसोसियेशन ऑफ इंडिया के श्रीमती कावुरी शारदा मेमोरियल अवार्ड 2014 से सम्मानित किया। उन्हें यह सम्मान उनके सर्वोत्तम शोध पत्र जिसका शीर्षक 'यूआरपी तथा आईएसएसआर मार्करों का उपयोग करते हुए विभिन्न फसलों को संक्रमित करने वाले *आल्टरनेरिया आल्टरनाटा* आइसोलेट्स की आनुवंशिक विविधता विश्लेषण' के लिए दिया गया। यह शोध पत्र इंडियन जर्नल ऑफ प्लांट प्रोटेक्शन के वाल्यूम 42, 2014 में प्रकाशित हुआ था।

डॉ. एन. शिवराज को एडवांसमेंट ऑफ बायोलॉजिकल साइंस, वनस्पति विज्ञान विभाग, कर्नाटक विश्वविद्यालय, धारवाड़, कर्नाटक द्वारा 'प्रख्यात जैव-विविधता विज्ञान-2015' पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

डॉ. के. अनीता, डॉ. कमला वेंकटेश्वरन, डॉ. एन. शिवराज तथा डॉ. एस. आर. पंद्रावड़ा को 19 दिसंबर, 2015 को चेन्नई में वीनस इंटरनेशनल फाउंडेशन द्वारा स्थापित वीआईएफ रिसर्च अवार्ड 2015 के तहत 'विशिष्ट वैज्ञानिक पुरस्कार' से सम्मानित किया गया।

डॉ. वीना गुप्ता को 19 से 21 मार्च, 2016 तक एसआरएम विश्वविद्यालय, कट्टनकुलाथुर, चेन्नई में सम्पन्न द्वितीय विश्व नोनी कांग्रेस के दौरान नोनी अनुसंधान के क्षेत्र में उनके उल्लेखनीय



डॉ. एम.एस. स्वामीनाथन से पुरस्कार ग्रहण करती डॉ. वीना गुप्ता

योगदान के मान्यता स्वरूप डब्ल्यूएनआरएफ- उत्कृष्ट अनुसंधान वैज्ञानिक पुरस्कार नोनी-2015 तथा इंटरनेशनल सोसायटी फॉर नोनी साइंस के फेलो (आईएसएनएस) अवार्ड से सम्मानित किया गया।

डॉ. यासीन जेशिमा को आईसीएआर-केन्द्रीय आलू अनुसंधान केन्द्र, पटना में सम्पन्न 'नवीन कृषि उद्यमशीलता के माध्यम से ग्रामीण आजीविका सुरक्षा'- 2016 पर आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन के अवसर पर 'फली जीनोमिक संसाधन' के क्षेत्र में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए 'युवा महिला वैज्ञानिक पुरस्कार 2014' से सम्मानित किया गया।

डॉ. महेश सी. यादव को एनएससी परिसर, नई दिल्ली में 27-01-2016 को 'कृषि में युवाओं को आकर्षित करने और इस उद्यम में बनाए रखने (आर्या)' पर आयोजित राष्ट्रीय युवा सम्मेलन के अवसर पर 'कृषि जीवन ज्योति अवार्ड 2015' से सम्मानित किया गया।

डॉ. ललित आर्य को एसआरएम विश्वविद्यालय, कट्टनकुलाथुर, चेन्नई में 19-21 मार्च, 2016 को सम्पन्न द्वितीय विश्व नोनी कांग्रेस के दौरान अंतरराष्ट्रीय नोनी साइंस सोसाइटी द्वारा वर्ष 2015 के लिए 'मोरिंडा स्पी. के लिए आईएसएनएस-सर्वोत्तम अनुसंधान शोध पत्र अवार्ड' प्रदान किया गया।

नई स्वीकृत परियोजनाएं

आईसीएआर की एक्स्ट्राम्यूरल परियोजनाएं

1. 'आण्विक और शरीर क्रियात्मक संसाधनों के उपयोग द्वारा गेहूं की ताप सहिष्णु उच्च उपजशील किस्मों का विकास' परियोजना को डॉ. राकेश सिंह, प्रधान वैज्ञानिक, जीनोमिक संसाधन प्रभाग को स्वीकृत की गई जिसका कुल बजट परिव्यय 87.35 लाख रूपए है।
2. 'जंगली प्रजातियों से भिंडी के यैलो मोजेक वाइरस तथा इनेशन लीफ कर्ल वाइरस के प्रति सहिष्णुता के लिए खेती योग्य जीनपूल में प्रि-ब्रीडिंग' परियोजना को आईसीएआर-एनबीपीजीआर के क्षेत्रीय केंद्र, त्रिचुर के लिए अनुमोदित किया गया।
3. बीबीएसआरसी, यूके तथा डीबीटी, भारत सरकार द्वारा वित्त पोषित एक नई संयुक्त परियोजना 'गेहूं में नाइट्रोजन उपयोग दक्षता में वृद्धि (एनयूई)' को 16.2.2016 को आईसीएआर-भारतीय गेहूं और जौ अनुसंधान संस्थान, करनाल में प्रारंभ किया गया। इस परियोजना के सहयोगियों में आईसीएआर- एनबीपीजीआर, आईसीएआर- एनआरसीपीवी, आईसीएआर-आईएआरआई, आईसीएआर- आईआईडब्ल्यूबी, बीआईएसए, पीएयू (लुधियाना), रोथमस्टेड कृषि अनुसंधान स्टेशन (यूके), ब्रिस्टल विश्वविद्यालय, यूनिवर्सिटी ऑफ नॉटिंगम तथा कैनब्रिज विश्वविद्यालय, यूके शामिल हैं।

प्रकाशित : निदेशक, भाकृअनुप-राष्ट्रीय पादप आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो

पूसा कैम्पस, नई दिल्ली-110 012, भारत

संकलन एवं संपादन : अनुराधा अग्रवाल, कविता गुप्ता, ललित आर्य एवं गया चरण

कम्प्यूटर सहायक: विजय कुमार मंडल